होम /
बाइबल की पुस्तकें: भाग 9 (अय्यूब की पुस्तक)

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की स्तुति हो। बाइबल की पुस्तकों के इस अध्ययन में आपका स्वागत है। हम पहले ही प्रारम्भिक कई पुस्तकों का अध्ययन कर चुके हैं। यदि आपने अभी तक उन्हें नहीं पढ़ा है और पढ़ना चाहते हैं, तो यहाँ देखें >> बाइबल की पुस्तकें: भाग 1

आज हम आगे बढ़ते हुए एक और महत्वपूर्ण पुस्तक — अय्यूब की पुस्तक — का अध्ययन करेंगे।

अय्यूब की पुस्तक

अय्यूब की पुस्तक बाइबल की सभी पुस्तकों में सबसे प्राचीन मानी जाती है। यह पुस्तक उत्पत्ति की पुस्तक लिखे जाने से भी पहले लिखी गई थी। उत्पत्ति की पुस्तक नबी मूसा ने लिखी थी, और इसी प्रकार अय्यूब की पुस्तक को भी नबी मूसा ने ही संकलित किया।

मूसा अय्यूब के जीवनकाल में उपस्थित नहीं थे। अय्यूब मूसा से बहुत पहले जीवित थे। अय्यूब के जीवन की घटनाएँ स्वयं अय्यूब

तथा उसके आसपास के लोगों (उसके मित्रों और संबंधियों) द्वारा लिखित रूप में सुरक्षित रखी गई थीं। बाद में, परमेश्वर के मार्गदर्शन में, मूसा ने उन सभी विवरणों को एकत्र करके उन्हें पुस्तक के रूप में व्यवस्थित किया। यही वह अय्यूब की पुस्तक है जिसे हम आज बाइबल में पढ़ते हैं।

अय्यूब का जन्म “ऊज़” नामक देश में हुआ था, जो आज के समय में यर्दन देश के दक्षिणी क्षेत्र के आसपास माना जाता है।

अय्यूब इब्राहीम से भी पहले जीवित था, इसलिए वह इस्राएली नहीं था। फिर भी वह अपने पूर्वजों (नूह की वंश परंपरा) से स्वर्ग और पृथ्वी के सच्चे परमेश्वर को जानता था और उसका भय मानता था।

अय्यूब की पुस्तक के चार मुख्य भाग

1. पहला भाग (अध्याय 1–2)
अय्यूब का परिचय और उसकी परीक्षाएँ।

2. दूसरा भाग (अध्याय 3–38)
अय्यूब और उसके तीन मित्रों के बीच संवाद।

3. तीसरा भाग (अध्याय 39–41)

परमेश्वर स्वयं हस्तक्षेप करते हैं।

4. चौथा भाग (अध्याय 42)
परमेश्वर का न्याय और अय्यूब की पुनर्स्थापना।

पहला भाग

पहले दो अध्याय अय्यूब के चरित्र को बताते हैं — वह निर्दोष, सीधा, परमेश्वर का भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला मनुष्य था।

ये अध्याय हमें स्वर्गीय जगत की एक झलक भी देते हैं। यहाँ हम समझते हैं कि जब हम पृथ्वी पर अपना जीवन जी रहे होते हैं, तब कोई हमारे विरुद्ध परमेश्वर के सामने दोष लगाता है — और वही हमारी परीक्षाओं का कारण बनता है।

यह दिखाता है कि धर्मी लोग भी परीक्षाओं से क्यों गुजरते हैं।

दूसरा भाग

अध्याय 3 से 38 तक अय्यूब और उसके तीन मित्रों — एलीपज़, बिल्दद, और सोपर — के बीच लंबी चर्चा का वर्णन है।

वे उसके पुराने मित्र थे और ज्ञान से परिपूर्ण माने जाते थे। जब उन्होंने अय्यूब की विपत्ति के बारे में सुना, तो उसे सांत्वना देने आए।

लेकिन उन्होंने यह मान लिया कि अय्यूब ने अवश्य कोई छिपा हुआ पाप किया होगा, क्योंकि उनके विचार में बिना पाप के इतनी विपत्तियाँ नहीं आ सकतीं। वे स्वर्ग में चल रहे आत्मिक संघर्ष से अनजान थे।

वे बार-बार अय्यूब से कहते रहे — “तू पश्चाताप कर!”

अय्यूब ने कहा कि उसने कोई गुप्त पाप नहीं किया, फिर भी वे उस पर विश्वास नहीं करते थे। लंबी बहस चलती रही। अंत में एलीहू नाम का एक युवक भी चर्चा में शामिल हुआ।

उन्हें पता नहीं था कि परमेश्वर उनकी सारी बातें सुन रहे थे।

तीसरा भाग

उनकी बातचीत के बाद परमेश्वर बवंडर में से अय्यूब को उत्तर देते हैं।

अय्यूब 38:1-2
“तब यहोवा ने बवंडर में से अय्यूब को उत्तर दिया और कहा,
‘यह कौन है जो बिना ज्ञान की बातें कहकर मेरी युक्ति पर अन्धकार डालता है?’”

परमेश्वर अय्यूब और उसके मित्रों से प्रश्न पूछते हैं, जिससे वे समझें कि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के कार्यों को पूरी तरह नहीं समझ सकता।

अय्यूब 38:4-5
“जब मैं ने पृथ्वी की नेव डाली, तब तू कहाँ था? यदि तुझे समझ हो तो बता।
किस ने उसकी नाप ठहराई? या किस ने उस पर डोरी तानी?”

इन प्रश्नों का उत्तर कोई मनुष्य नहीं दे सकता।

चौथा भाग

परमेश्वर के प्रश्नों के बाद अय्यूब नम्र हो गया और उसने

पश्चाताप किया।

अय्यूब 42:1-6
“मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है…
मैं ने ऐसी बातें कहीं जिन्हें मैं समझता न था…
इसलिए मैं अपने आप से घृणा करता हूँ और धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ।”

इसके बाद परमेश्वर अय्यूब के मित्रों से क्रोधित हुए।

अय्यूब 42:7-9
“तुम ने मेरे विषय में वह बात नहीं कही जो ठीक है, जैसा मेरे दास अय्यूब ने कही।”

उन्होंने उन्हें अय्यूब से प्रार्थना करवाने को कहा, और परमेश्वर ने अय्यूब को स्वीकार किया।

अंत में परमेश्वर ने अय्यूब को पहले से दोगुना आशीष दी।

इस पुस्तक से हम क्या सीखते हैं

1. अय्यूब की तरह परमेश्वर का भय मानना और बुराई से दूर
रहना।

2. परीक्षाओं में धैर्य रखना
याकूब 5:11
“देखो, हम धीरज धरने वालों को धन्य कहते हैं… तुम ने अय्यूब के धीरज के विषय में सुना है।”

3. पवित्र जीवन जीना, क्योंकि शैतान हमारे विरुद्ध दोष लगाता है।

4. धार्मिक विवादों से बचना
(तीतुस 3:9; 2 तीमुथियुस 2:14)

5. धर्मी का दुःख यह सिद्ध नहीं करता कि परमेश्वर उसके साथ नहीं है।

6. मित्रों और शत्रुओं के लिए प्रार्थना करना

अय्यूब 42:10

“जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसकी दशा बदल दी।”

जैसा प्रभु यीशु ने सिखाया:

लूका 6:27-28
“अपने शत्रुओं से प्रेम रखो… जो तुम से बैर रखते हैं उनका
भला करो… जो तुम्हें सताते हैं उनके लिये प्रार्थना करो।”

क्या आप उद्धार पाए हैं?

यदि अभी तक नहीं, तो आप किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं? मसीह शीघ्र आने वाले हैं। यदि आज वे कलीसिया को लेने आएँ, तो आप कहाँ होंगे?

यदि आज आप पश्चाताप करके मसीह को ग्रहण करते हैं, तो यह आपके जीवन का सर्वोत्तम निर्णय होगा। कल की प्रतीक्षा मत कीजिए, क्योंकि आप नहीं जानते कि एक दिन क्या लाएगा।

यदि आप पश्चाताप की प्रार्थना करना चाहते हैं, तो यहाँ देखें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

>> पश्चाताप की प्रार्थना

आने वाली पुस्तकों की श्रृंखला को पढ़ना न भूलें।

प्रभु आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp